

DPN 6517

पाण्डवगीता

Title :

Run. No. 7242

Cat. No. 228

Micro. No.

Subject *Stotra*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 19.5 x 8

Folios 40

Lines (in a page) 6

✓
Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 928

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : *Together with Nepāla bhāṣā*

Material : palmleaf / paper / *thyaṣaphu* /

Both side yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon ① इति श्रीपाण्डवगीतास्तोत्रं समाप्तः ॥ सम्वत् ८२८ भाद्रपदि १०
पृष्ठस्थितिवाहं खुनु वेद्य चतका जुलो ॥ -... कौटिल्या सालिकया सिद्धिनारायणन्या
स्याफू जुलो शुभ ॥ ② इति स्कण्डपूशने तुलशिसौत्रं समाप्तः

आ.प्र.
२२८ पांडवगीता
नेवारी भाषा
अर्थ सहित



२०
१५
१०
५
०
cmts. 5 10 15 20 25 30

२०० नमो ह्यवने दाय ॥ ॥ लामहर्ष उवाच ॥ प्रह्लाद
दना नदयना गनय पुत्री कव्यासां वना वधुकामेन करीष्य
काशात्रकांगदाई नवजिह्व विहीष सदा नानहं यनमल
गवता नमामि ॥ ॥ यनमल गवतय निजिन नमस्तानधकं
लामहर्ष मवीन नाना दयकाः ससुधा लसा प्रह्लाद नानदयना
गनय पुत्री कव्यास नम्यनीष मुकदवामेन करीष्यत्रकांगः

दाई नवजिह्व विहीष सदा ॥ १ ॥ धर्म उवाच ॥ धर्मा विवर्द्ध
तु यधिरि न कीर्त्तन न पायं य स धर्मि वृकोद न कीर्त्तन न गत्र वि
न धर्मि धन उर्य कीर्त्तन न माडी स गोकथयतां न हवन्ति नाश ॥
॥ इति विनया नाम कायानः धर्म वध यशुयि आली मस नयाना
मकायानयापना गशयी आनू र्त्तनयाना मकायानः गक्रना गश
यी आनू र्त्तन सह देवयाना मकायानना गना गशयी आधवकं

म ४

मनाजान आशादयकल ॥ २ ॥ **वक्रावाव** ॥ ऊमानवाविगगन
गयनायनराना नाय संस्रन गनं गनं स्रन निध्यान न न न न न
किलिष वदना ले मा ३४ य पाधन व संनयन ४ यिवनि ॥ ॥ ग्व
मनूष्य न वेना गशया आयया मयया दयका आः द आयं गनू रू या
अविष्ठाक क्र श्री ना नाय सनि त्वनि त्वे स्रन सया ना अ यानि शी थ
थि ६ क्र मनूष्य या ध्यान या ना नं या य ना गशयी शी पून र्वा न थ सं

सावसं ऊ न्मशया अ मा मया दद ता न मालि अ मख ध कं वक्रा नः
आशादयकल ॥ ३ ॥ **ॐ उवाव** ॥ नी ना यत्ता नाम न ना नः
ना सं प्रसिद्ध वी न ४ क थि न ४ य थि व्वां न न क ऊ न्मा जि न या य सं
वयः रु य त्व ल व मृति मा ग क व लं ॥ ॥ श्री ना या य न या ना म
हा ना नः मनूष्य नू य ख ध कं थ गलि य थि वी स ध या अ ग लः थ क्र
ख नः नून क ऊ न्म स या ना अ ग या पा य स म लं ना त रु यी अः श्री नाः

गायनया नामकायामात्रनः श्रीनायायनया केलाशरकी नसेवाया
 यमालमनूषयमितेनधकः ॐ नन आरुदयकल ॥ ४ ॥ **शिवि**
वडवा मय मय मयीत कोषय वासं श्रीवत्सां कं को सुला हासिः
 नागः यन्यात्मानं प्रसुनीकाय दाकं विष्णु वन्द सर्वला के के नाथं ॥
 ॥ थथिं गम श्रीनायायनजिननमस्का लगथिदक्रनायाय
 नभालसाः मययाव स्रुथं गलिनयाव स्रुः ऊसयीगां वनधडागिः

रुदयमश्रीवच्छयाविक्रदया अवाह रुनं को सुलम सीन मजीः
 नया अगिं मलयमानशया अविनाक्रमानशया अवाह पुन्य आ
 त्माशया अवाह रुनां प्रलखानया रुलथिं गम मिखायावानशया अ
 वाह थथाह क्र श्रीनायायनधकं यथिष्ठिनन आरुदयकल ॥
 ॥ ५ ॥ **श्रीलेमसनडवा** ॥ कलो यममसवनावनाधवाविषा
 मकाद्याखिलविग्वमूर्हिनाः समरुगाजनववाह रुयिनातः

भस्वयगुरुगवानुपसिद्धम् ॥ ॥ नूनकजीवाङ्गुतिमायवः
 नदयाडावाढ्युधिविःलससलकंविहाडावाढवलसःथक्रविः
 भनूयिग्रीनानायसनवनाहनूयीशयाडाथगुलिपृथिविथडाध
 वानमियाडापृथिवीनकायाम्यविकाकःधपिलमहगवाननजि
 भातरुपाप्रसनशयाडाविकायमालधकंग्रीलीमसेननत्राखाद
 यकल ॥ ५ ॥ नूननडावाव ॥ नूविन्ममयकंमननमयूतं

विगुंयगुंकावसलुगलाविनःगैलाकविक्कावविलावलाविः
 नाहनीप्रयंनामिगमिमहात्मना ॥ ॥ थथिठक्रहविजिः
 नलायदयमालधकंगविठक्रकालसाविकलयानविकलयेन
 जीडाःखनमद्थूलिउलिधकप्रमानमदूऊन्ममदूमनय्यआदि
 नजीडाप्रानियाप्रगुलविगुलशयाडाविकाकःहभाविमयन
 हकिऊनयनिसनस्ययल्लगुलि लाकसंविक्कावशयाडाविका

कंधविठक्रहनीधकं नूनन न्राह्मदयकल ॥ ॥ न कल
उवाच ॥ अदिगमनमधमाल्कर्मयागानवकादियकलविहि
नननमयकि कीठकिमिसनमरिगत्वागगम्यां गनात्मारव
उममहदिसंकेगवरकिनका ॥ ॥ कर्मगुलिखिधानन
विगकागवाहायानिमिहिनग्ववलसंननक न्रादिनमरीरुध
यतगनेग्ववलसंककागया कसकनमकायसगदि पाधलकि

मिशलअनधगुलिवलसद्गने वाधक न्रात्मानः श्रीनायाय
नयाकेशकत्रकरकिशयागवानेदयमालधकंनकननन्रा
ह्मदयकल ॥ ॥ सहदेवउवाच ॥ तस्यरुहवनाहम्यविह
शानगुलनकसप्रसमंकयिकर्चनितेखायीहनमानम ॥
॥ विष्णुयात्रंसनरुहवनाहसुखंविष्ठाककयागग्वक
मनूयननमकावयागधमनूयशुलमांजिननमस्कावध

कंसहृदवनत्राह्लादयकल॥ २॥ **कनिनवाव॥** स्वकर्मरु
लनिदृष्टांजांजांनिंबुजाम्बरुंगस्यांगस्यांद्विकमल्ययिरु
किंदृष्टासुभ॥ २॥ **हृदवीकमथडाकर्मयारुलनगुगुलि**
ग्वगुलिथसक्रिऊनरुयिडाडगुलिडगुलिथगुरुकक्रिनक
सुथालयाकरकि काठुयमासधकंकंतिनग्रीकषूयाकविनः
गियाक॥ १०॥ माडीनवाव॥ कषूनगाकषूमनस्मननिना

गोवकषूपूनरूक्तिगवगहिनदहाप्रविगकि कषूंरुविऊंथा
मंग्रुङ्गगंङ्गगगनं॥ ॥ **ग्वक्रमनरुयनग्रीकषूयाकनसश**
याडाःक्रिथंस्मसायाठडाःथक्रमनरुयपनिऊत्सांगकाल
सग्रीकषूयाकलीनरुडागलधमनुपठपाडात्रग्रीसविडीः
हिदयथंधकमाडीनत्राह्लादयकल॥ ११॥ दोयववाव॥
॥कीठषूपकिषूमृगषूगजीसृपषूःनरु४पिभावननऊ

अपि उग्रग्राह्या तु मरुवतु कभवत्स न्युसातस्येव रुकि
त्रवनाय एव नितीव ॥ ॥ रुकभव कीलपुंगलवनरु
तुललरुनु नाकसपि भवमनष्य थपनि आदिया केरुर्म
रुलशनगनंगवतु लिथसंथनरुर्मसंकुलधालयाक्या
दयाअकलधालयाक रुकियायतु लिहानजितप्रसन्नरुय
मालधकंडायदीन श्रीकृष्णयाकविनगियाक ॥ १२ ॥ सु

रुडावाव ॥ ॥ रुकाहिकृष्णसकृत्प्रनामिः दम्भमधीनहि
रुमिगुल्यंदम्भमधियूननगिरुन्मः कृष्णप्रनामिनयः
नरुवाय ॥ ॥ श्रीकृष्णयागकृष्णधालनमत्कालयाकक्र
शक्रियालन्रत्वमधरुयाकक्रयापूनदीनरुन्मकायमा
लः श्रीकृष्णयागकृष्णधालनमत्कानयाकक्रयाः पूनदीनः
रुन्मकायममालधकंसुरेडान श्रीकृष्णयाथमन्नाहृदय

कल॥ १३ ॥ अहिमन्युवाच ॥ लभविं लभविंद हवमनाय लभ
विन्द लभविन्द मूकंद कषू लभविंद लभविंद नथांगया लभ
विन्द लभविन्द नमामि नित्यं ॥ ॥ ह लभविन्द ह लभविन्दः
हमनाय ह लभविन्द ह लभविन्द ह मूकन्द ह कषू ह लभवि
न्द ह लभविन्द ह नथांगया लभ ह लभविन्द ह लभविन्द क्रिथं
क्रिथं कुलपालनमत्स्यलधकं ४ अहिमन्युन विष्णु याकविन

नियाक॥ १४ ॥ धृष्ट द्युमत्त उवाच ॥ श्री नाम नानायन वास
दव लभविन्द वैकुण्ठ मूकन्द कषू श्री केगवानन्द नृसिं हवि
ष्णु मांग्राहि सत्ता ननु उगद द्यात् ॥ ॥ ह श्री नाम ह ना
नायन ह वास दव ह लभविन्द ह वैकुण्ठ ह मूकन्द ह कषू ह
केगव ह नृन न ह नृसिं ह ह विष्णु जिन कायाय मालधकं
श्री कषू याक धृष्ट द्युमत्त न विन नियाक॥ १५ ॥ सायुकि

नूवाव॥ अश्वमेधहविष्मदुषुदामादनयुतलमविन्दा
नकसवेमवासुदवनमस्तुते॥ ॥ ह अश्वमेधहविष्मदुः
विष्मदुषुदामादनयुतलमविन्दाह अश्वमेधहवासुदवः
कुलपालनमत्कानधकः सायकीनविनगियाक॥ १७ ॥ ३
इवावाव॥ वासुदवंयनिष्मदुः जान्यदवमूयागतहविष्म
जाद्वीगीनकूपंखनगिदूर्मति॥ ॥ ग्वद्वमनूष्यन

श्रीनानायनगालगाअभवदवयाकरुनायायूडाः थद्व
मष्यद्वथंधालसाः गंगमीनसवाडाअप्यासवायकाडाः
वाद्वमनूष्यगंगमीनसदुविष्मयकाडाः लखगानध
अद्वयागथीद्वद्विः थचिंखमनूष्यडाउथद्वधकंडद्व
नविनयागश्रीद्वयथास॥ १८ ॥ ॥ क्षेमदवाव॥ नूपाः
अमीधमयनाअनगहदिवावनात्रोयचिगकुतायः ऊदिः

सिक्किवित्तुक्तं कृतं मया कृतं नार्द्धन कृतं न तु प्यतु ॥
लंबयाथ स ददा अथा ल नया अथा ल कि न स वा क्त स दा एः
रु ल थ न थ स कुरु ल सां कि न ली द म ली या द थ गु लि न विष्
स गा ष रु य मा ल ध कं लो म्य मृ षी न त्रा हा द य क लं ॥ १८ ॥
॥ स ऊ य उ वा व ॥ त्रा हा वि ष र्मु मि थि ला ग्व ली ताः धा न ष ऊ
बा धि षू व र्ह मा ना स की ल्य ना ना य स म द मा वः वि मू क द र वा

सू रि ना र व नि ॥ ॥ ग्व क्त म न र व य नि गु ली सं ता न स
त्र न ग ना ग न यी दा या त का डा मा हा द र्व सि या डा नि क्त ऊ रु
य का डा थ ल ल ल नू य का डा ग्व ष डा डा थ नि डा थ थ या द म न
व य नि से न ग्री क षू या ना म का ल डा डा थ क्त या स म स या पः
मा व न रु या डा मा क ग मि ला य डा ध कं सं ऊ य न ग्री क षू या के
वि न गि या त ॥ १९ ॥ ॥ त्र क्त न उ वा व ॥ त्र हं हि ना ना य न दा स

20
15
10
5
0
cmts. 5 10 15 20 25 30

दासदासस्य दासास्मिहि दासदासः नूनान्यमीत्युक्तगताः
न नो जोगत्मादिदं धन्यतयास्मि लोके ॥ ॥ किनिश्चयनं
विष्णुदासश्च फ्रया दासयानं दासकिश्च संतानतः मनूरय
यनिः विधिं गतधन्यललयं वा निशः ॥ न न ग्वक् विष्णुकि
शलशक्कधन्य धकं नूनन धाल ॥ २० ॥ विद न उ वाव ॥
बास देव स्थ ऊरु का मांगा संकृत मानसा गत्य दासस्य दा

साहं एव न न्मसि जं मति ॥ ॥ ग्वक्क मनूरय विष्णुकि
शयाता भन मूर्ति शयाता वी ज्वनया कमन गयाता वा निश
श्च फ्रमनूरय यनिस वलयानं वलः न न्म न्म स कि शय दय
माल धकं विद न न धाल ॥ २१ ॥ लीष्म उ वाव ॥ विद य नी न
ब्रू काल वः य विद्या रा व व भू ग्राहि मां कय या कृष्ण भव
नाग गवत्सल ॥ ॥ हृषी कृष्ण भव नाग गवत्सलः वि

पनीगकालसथअधिधिगालगाअअनवलसकिथसकया
दयाअनकायासविक्कायमालधकःरिष्मनःश्रीकपूयाकवि
नगियाक॥ २२ ॥ डामउवाव॥ ययहुगावकुधवनदेत्याः
हेलोकांनाधऊनार्द्धननःगगगावेनिलयंसूनामीका
धयिदवस्यववनगुल्यं॥ २३ ॥ कयउवाव॥ ऊऊनमनिसू
लमिदंसधूकेगलावेःमन्याधनैकमदनयरुत्रवत्रवत्यर

त्यरत्यपविवावकरत्यरत्यरत्यस्यरत्यरुनिमास्मनला
कनाथ॥ ॥ हसधूकेठरयागपूशयाअवाधकःकिथगु
लिऊनमसनिस्सूलःथननकिनकुलयालयाकेऊगाकानका
यायासविक्कायमानऊधलसाऊलयालयादासयानंदासः
थऊदासयानंदासथयादासयानंदासथऊयादासयाः
नंदासशयगुलिजिगकानःहलाकनाथधकंश्रीकपूयाक

क्या चार्थं न विन गियाक ॥ २४ ॥ **त्रयस्त्रिंशद्भावाव** ॥ लमवि
न्दकमवऊनार्द्धनवासदवविष्यमविष्यमधूसूदनविष्यत्र
यः श्रीपद्मनाथपूषार्हमयन्नग्रं नानायस्ययूगनृसिहः
नमानमस्त ॥ ॥ हलमविन्दकमवऊनार्द्धनवास
दवहविष्यमहविष्यहमधूसूदनहविष्यत्रयहयन्नना
रहयन्नार्हमहयन्नग्रहनायनहत्रयूगहृसिहजि

नकुलधालबावंवाननमस्कालत्रनकनायनयानामका
याडात्रयस्त्रिंशद्भावावगियाक ॥ २५ ॥ **कस्तूतवाय** ॥ नान्यं
वदामिनगृहमीनविनयामिनान्यंस्मनामिनरुजामिनवा
ग्रयामिन्नकलदीयवनसदयमादननः श्रीश्रीनिवासपूषार्
हमदहिदास्यं ॥ ॥ हृश्रीश्रीनिवासहयन्नार्हमजिन
कुलसाभवयानाममकायाः भवयारवंमृदकाः भवयाध्यानंम

यादाभवयात्मसमयादाभवयासर्गमयादाभवयाश्रम
यादाकलयायोलेःयालिनयायावलशयधकंतिमनसरुख
सधादाःकयायुसन्नशयाडाविकायमालधकंश्रीकपूयाक
कर्त्तूनविननियाक॥ २४ ॥ धृगनायुडवाच॥ नमानमका
नसवामनायनायायसामिमिग्रविक्रमायःसानप्रवकाः
सिगदाधनायनभासुगक्षेयूरुषार्हमाय॥ ॥थथीदक

पूरुषार्हमःतिननमत्कालधकंश्रीथीदकधालसावामनधा
यकाडाविकाककनायायनःग्वकयायनाक्रमःथसंमानः
सदृष्टान्नगयथयसमदसानंगधनूषगदावक्रधललपाडावि
काकथथीदकश्रीकपूतिननमत्कानधकंधृगनायुनआरु
दयकल॥ २५ ॥ गमक्षर्यवाच॥ त्वभवमागावयितात्वभवत्
भववश्चम्वत्तात्वभवत्वभवविद्यारुनीनंत्वभवत्वमेवमर्चम

मदेवदेव॥ ॥ हृदयदेवनिश्चयनिश्चयनंमामंकुलपा
लवदंकुलपालपालविद्याधनंथडाधिधियासांसमसंकुल
पालधकंगमश्चवीनग्रीकृष्णयाकविनगियाक॥ २८ ॥ दर्श
धनउवाच॥ ज्ञानामिधर्मंनयमप्रविर्हिःज्ञानामियायंनयम
निविर्हिःकनापिदवनदुदिकिगनःयथानियूकेस्मिगथा
कथामि॥ ॥ धर्मयाकाकिनमसियायापयाकाकिनम

सियाकिदुदयसवाठदेडाग्वक्रखडाकिनमसियाथक्रद
अनयागकागुलिकिनयादा॥ ॥ यस्तुसुगुमपाखिनयः
कीगसुनधारुमन्नहंयक्राएवान्यकीःममदाधानदीयग
॥ ॥ हंपन्नधारुमक्रनुधकक्रनथदागुलिधायुडा
ःथथंकुलपालःयनुधकक्रःकिशलंकनुगुगुलिकुलपाल
सनयागकलउगुलिकिनयादा॥ २९ ॥ इयदउवाच॥ इ

यस्य नन्दलभविन्द माधवानन्दकमवविष्ठाकृष्णदुषी के मः
वासुदेवनभासुग ॥ ॥ हयस्तः ह्यनन्द ह्यलभविन्दः ह
माधव ह्यननक ह्येगव ह्यविष्ठा ह्युषिकेसः ह्यवासुदेवस्तु
लयालयागः किननमस्का लधकं डूपद नाजान ग्री कृष्णया
मुनियाक ॥ ३० ॥ ऊयड थड वाच ॥ नमः कृष्णाय सुदायः
प्रक्रमननकमूर्हयः कागव वाय कागय त्वामहं सननं गति

॥ विकर्षुड वाच ॥ कृष्णाय वासुदेवाय देवकी नन्दना
यव नन्दलभपद मा वाय लभविन्दाय नमानमः ॥ ॥ ग्री
कृष्णाय वासुदेवाय देवकी या नन्द या कृष्णाय देवकी न
न्दलभतया वालकयागं लभविन्दयागः किन वा नं वा ननमस्तु
नधकं विकर्षुन मुनियाक ॥ ३१ ॥ सामड थड वाच ॥ नमः
पनमल्यानं नमस्ते विम्वलावनः वासुदेवायः गन्नायः यटी

नायटयनमः॥ ॥रूपनमकल्याणः॥रुसंसावनकाः
याकम्कलयालयानि नमस्कानः॥रुनंवासदेवयागंः
गानमूर्तिद्रयागंः॥उटीपनीसनाथयागंनमस्कानधकं
मदननसुगियाक॥ ३३ ॥वेनाटिनूवाव॥नभावपुत्रने
दवायलभवापुत्रनहिनायवः॥उगइगायकपूयलभविन्दाय
नभानमः॥ ॥वृक्षस्वरूपपुत्रदवयागंः॥सावापुत्रनही

गयाकम्कयागंः॥ग्रीकपूयागंकिनवाचंवावनमस्कानधकंः
वेनागिनसुगियाक॥ ३३ ॥गस्यउवाव॥अगसीपूष्यसं
काशंपीनवासंसदायुगंयनमस्यनिलभविन्दनगवांविः
द्वगहयं॥ ॥गिनिदूयाधिग्वमनीलयावर्तः॥सदायी
गांवधडागिः॥ग्ववेलसंजर्नममालः॥धधिदुपुत्रग्रीकपूय
पुत्रमनूयननमस्कानयाग॥पुत्रयाग्ववेलसंरयदयिम

२०
१५
१०
५
०
० cmts. 5 10 15 20 25 30

रुधकं गत्य नाज्ञानविनगियाक ॥ ३४ ॥ वलरुडउवाव
॥ कपूकपूकया लत्यमगगिनांगगि एवं संसात्रा धूवमम
नां प्रसिदयनमज्यन ॥ ॥ हुकपूकपू हुकपानः सरु
कपूगगिमदूपनिसगगिशनं कलपालः ॥ संसात्रा हा
नसमूडथधिसमग्रनयाडा वाढ मनूख आदिन प्रीनी ला
कयागः कलपाल धन कया प्रसन्नरुयाडा विफायमालधकं

धीकपूया थ स. वलरुडन आरूदयकल ॥ ३५ ॥ श्रीक
उवाव ॥ सखं वीमिमनूजात्ययमूडवाढः थामां मरूदन
वसिं हुनार्दननः क्रियनऊपनएनूदिनं ममनाममागुं वैः
कृष्टुवासनियनं सवन्नूयानि ॥ ॥ हुमनूख लाककि
नला हागथकायाडाः सखसखनं ह्यायः ग्वक्रमनूखनः म
कूदधकं नवमिहधकं रुनार्दनधकं क्रिथं थूगुलिनामः

कायिडाः धृतिरुनाममागुननिश्चयनं चक्रमनन्यनवेक
थसवासयानानदयूडाधकं श्रीकृष्णनञ्जालदयकलं ॥ ॥
कृष्णकृष्णैगिकृष्णैगिनामांस्मनतिनित्यसजलंरित्वाअथा
पद्मंननकादूडनाम्यहं ॥ ॥ पुनर्वाचश्रीकृष्णनञ्जाल
दयकलंरामनृत्यलाकव्यक्रमनन्यनश्रीकृष्णश्रीकृष्णध
कंकिनामकायिडाअक्रमनृत्ययागजिनशूलसांलंरवसः

आद्यपल्लवानध्याह्यार्थननकनउद्धानयायधकंश्रीक
ृष्णनञ्जालदयकलं ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ संकनाः
नानायनल्लुकाः मपाकल्यभगवयंगंगमदिसर्वगीर्त्यपूला
गारुवतिनित्यसः ॥ ॥ उपाकर्मभगवद्वियादापून्यः
गंगमन्नादिनदकापिर्धसंलानयादापून्यथागपून्यकृत्यः
नानायनरुधकंथगनानायनयानामकालाडाअगपून्य

दशधकः श्रीमहादेवन श्रीकृष्णाय स नमः श्लादय क म विः
क्रान्ता ॥ श्रीपार्श्वस्य वाच ॥ न त्रेव गंगम ऊ मूनाय न त्र त्म
दावनिगत्र स न त्वगिवः सर्वानि नि ति र्थ नि व स गिते न त्रः ऊ ग्रा ष्टू ताः
दानक थ प्रमंगा ॥ ॥ ग्वगुलि थ स श्री ना नाय न या क थ
कदा डा यान अगुलि थ स गंगम न्नादि नंद का ति र्थं नून थानि
अ थ थिं ग्व श्री ना नाय स धकं पार्श्व गी दे वी न श्री कृष्ण थ स न्ना

श्लादय कल ॥ ॥ ऊ म उ वाच ॥ न न क य द्य मा न तु न मे व यः
नि रा षि तं किं त्व या ना र्चि ता दे व क म वे क्क म ना स न ॥ ॥ रु
ना नाय स ग्गि न ४ न न क स था द म न र व या न ध या रु म न र व द्वा य
कृ प नि स्य न ना नाय न या मूर्ति द य का डा पू जा म या दा ना नाय न
या ना म न्न नं का डा कृ प नि स द र्व भा य न श्रु ति ध कं ऊ र्म ना जा
न श्री कृष्णाय स नमः श्लादय कल ॥ ॥ ना न द उ वाच ॥

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25

30



॥ रुन्माकनसरुसेषुः गयो ध्यान समाधि हि ४ नना सां की तर्प
यानांः कषू एकियुजायग ॥ ॥ दालकि धालमनरुय
रुन्माशयाडाः दालकि रुन्मासंगयसायादानरुनि सर्वपापना
गरुयिडाः थवलसगुनिः नानायनयापनमरुकिरुं आधकं
नावदमूनिग्वननत्राह्लादयकल ॥ ॥ प्रह्लाद उवाच
॥ नाथ जानिसहस्रषुः यषूयषूवजाम्यहंः गषूगषूयगएकि

नस्थिगारुमदालयि ॥ ॥ हेनावायमदालं दापोलरु
न्माकालडानेवेलसथग रुन्मासंकुलपोलयाकेरुकि यायः
रुयमालधकंः श्रीकषूयाकेः प्रह्लादनविनगियाक ॥ ॥
॥ जाप्रीतिनविमूकी नां विषयषूनूपायिनी त्वा मनूत्माननेनि
एः रुदयामूपसथागु ॥ ॥ पूनर्वाचन प्रह्लादन श्रीकषूया
केविनगियाकः हेयमेग्वनः श्रीकषूमूकि मद्लोकनगत्थन

यगियसंघीगिरुलः नृथं कलपोलयाकेरिनलगरुक्रिया
यगुलिः किनूगलस. सदा रुविहसुधिनश्य काअविसेविक्र
यमालधकं॥ ॥ **विष्णुमित्र उवाच॥** किं गत्य दाने किं ती
थे किं नृपाहि ४ किमध्वने ४ जानिखंधाय न देव ४ नायाः
यनं ऊगगुनूं॥ ॥ ग्वक्रमनरुलसां निखयानिखं थ
ससानयागुनूशया अविष्ठाकक्रम श्री नानाय सयाध्यान

याछाअचोनिअः थक्रमनरुषयादानपूर्तयायतीर्थऊ
ग्रायायगपस्यायायः क्वायकूपयोअनधकं विष्णुमित्रम
षीन नृप्रादयकल॥ ॥ **ऊमदग्नि उवाच॥** निष्ठा
सवोरवेकेषां निखं श्रीनिखमंगल ऊषाददित्ठोरगवांसं
गलायगनोहनि॥ ॥ ग्वक्रमनरुष्यनरुलसाः श्री नानाय
स ४ सदाकालं थअदुदयसदअधकं शलयाअचोनिअ. थ

२०
१५
१०
५
०
० cmts. 5 10 15 20 25 30

क्रमनृषया के सदां त्सा रु ४४ अधकं नित्यं नित्यं लक्षि
वधय रुयिडा रुने मंगल रु ४४ अधकं ४ रु म द गि म षी न त्रा
रू द य क ल ॥ ॥ ए व द्वा उ वा च ॥ ला ए ले षां रु य मेः
षांः कृ ग ले षां प ना रु यः के षा मि डी व न भ्रामोः दू द य क्का रु
नार्दन ॥ ॥ ग्व क्र म नृ ष्य न उ हो ल त्वा न या थी ग्व व र्ध
रु या अ वि द्वा क क्र श्री ना ना य सः नृ ग ल न स दा रु ध्वा न या दा

अवो ना थ क्र म नृ ष्य या स दा रु ४४ रु या अ वो नि अ थ क्रः
म नृ ष्य याः भ ग्गु य नि सः रु य रु य म द्ध कं ४ ए व द्वा रु म षी
न त्रा रू द य क ल ॥ ॥ ए गे ग म उ वा च ॥ ए म को गि दानं
ग्र रु ने षू का भी मा य प्रि या ला रु ग क ल्य वा सीः सु मे नृ ग रुः
लु हि नं न्य दानं ए म वि न्द ए म वि न्द न तु ल्य ना मं ॥ ॥ सा
दा को टि दान या दा पु न्यं का भी भ ग्र रु न र्ध नृ म्ना स या दाः

पुन्यप्रयागसः माघमाघपतिः शगकल्य बासया दापुंस्थसूमे
नृपर्वगतापुल्यलदानया दापुंस्थथनेपुन्यलमविन्दलमधाडा
कडाडगिपुन्यरुलदडाधकं लगेममषीन आरूदयकल
॥ ॥ **अग्निवाव** ॥ लमविन्देगिसदात्मानं लमविन्दगि
सदाऊपं लमविन्देगिसदाध्मानं लमविन्देगिवकीर्तनं
॥ ॥ स्नानयायवेत्तसं लमविन्दधकं नामकायऊपः

यायं लमविन्दधकं ध्मानयायं लमविन्दयाः नामकायं लमवि
न्दयाधकंः अग्निमषीन आरूदयकल ॥ ॥ **वसिष्ठ**
वाव ॥ कृषूणिमंगलं नामऊस्यकावसिवर्हनेः एम्मीएवनिः
नाऊन्डमहापागक कोगय ॥ ॥ **ग्वम्नमनूष्यनशुल**
सांमगलश्याडावो६४ श्रीकृष्णानामकायाडावो६४ थम्न
मनूष्याद्रूपाद्रूपाऊन्मसयाडागयापापसमस्तंरूडाडा

अनिश कोति कोति मरुपापसूक्ष्मा रम्भा रूगश्या अरूयिडा
धकं वनिष्ठमृषीन आरूादयकल ॥ **॥ अरुंधत्यवावा ॥** क
प्लान्स्मन स देवपापसंघागपञ्चनः भगधारे दमा प्रोतिः गिनि
वृरुहो गथा ॥ **॥ गवक्षमनूयानरुलसां अने कया पयादा**
अगयिडा थक्षमनूयान श्री कषूया स्मन स यागदा असमस्तः
यापरूदा अनिश गत्यधलसा रू नुया वृरुन कया डा यर्धनः

वर्तु रूगश्या थथधकं श्री कया थथिष्ठ प्रलवद अधकं अ
नूयनिधया क्रनधाल ॥ **॥ एगुनवाव ॥** नमामि गत्व
विन्द नाम गत्व सगा धिकं ददात्स्वान सान्द्र किं एवान्मखां
गजोगग ॥ **॥ मेव गत्व ४ अने कदडा थमिसन किदेन**
गविन्द नाम तुलि गत्व गडा धा ४ थुगुलि गविन्द नाम गत्व
याग किन नमस्का न गत्यधलसा श्री कषूया नाम अने कदडा

ॐ विन्द धकं नाम कायामात्र न ब्रह्मं योगव गधिग्वमूकिः
रुल लायदयिडाधधिग्वमूकिरुल ॐ विन्द ३ धकं स्वयोत्तकि
र्थनामकाडाकन लायिडाधकं एगुमपीन ब्राह्मादयकल ॥ ॥
॥ नमामिनावाय सयादयं कं कं नोमिनावाय नयूजनं
सदावदामिनावाय सनाम निर्मलं स्मरामिनावाय नगत्सम
व्ययं ॥ ॥ श्रीनावाय सयायादयं कं कं त्तिन नमस्कात्

श्रीनावाय नयायूजा तिनयायः श्रीनावाय सयानिर्मलशया
शबोडनाम तिननामकाय नव्यकशया शबोड श्रीनावाय स
याएकनायायगुलिगत्सलान तिनलायकधकं यूनर्दीव एगु
मूपीन ब्राह्मादयकल ॥ ॥ **भोनकउवाय** ॥ स्मृतसकलः
कल्याणं लजनं कं प्रजायगे यूनवोगमरु नित्यं दुर्जामि सनसं
वि ॥ ॥ धधिदक श्री कृष्णाया के तिमव सडानेधकं गथा

२०
१५
१०
५
०
cmts. 5 10 15 20 25 30

प्रधालसायनबोहमधयाप्रकंचलपोलव्ववेलसंऊनमृदु
मृमालप्रकंचलपोलःसखधयावकुमंगलधयावकुचलपो
लथधिठप्ररुनीयाकेकिनसधकंओनकादिमृषीत्यनयः
नीत्यनआरूदयकल॥ ॥गर्गउवाव॥नावायलमि
मकुक्तिवागक्तिवसवरिनीःगथयिननकेमृदायगंतीत्य
गठुगंमहग॥ ॥नवकसकृतीदशशयोमथूरुसि

किमनसमृतिआव्ययेधकं॥श्रीनावायलयानामनुकिदास
दयाशयोनसांआरूनीमूर्खयनिनवकसकृतिनशदाशयोः
नथूरुलिकिमनसमृतिआव्ययेधकंगर्गमृषीनआरूद
यकल॥ ॥दानहउवाव॥किनत्यवाभ्येमनेकुएकि
ऊम्यऊनार्द्धनेनमोनावायलयेमिनुसर्दीर्थसाधक॥ ॥
गवप्रमनूषांविष्णुयाकेएकिदयकाशनमोनावायनायथूः

लिमनुसयाशोचो निशः ॥ मनुशयिशासर्वा र्थसाधकमनूरुष्य
यागमेवगामनुकृपुजोऊनधकंदानलमृषीनश्रास्त्रादयक
ल ॥ ॥ वेगं पायन उवाच ॥ अग्रजालाग्वनकषू ४ अग्रपा
र्थाङ्कनूङ्कन ४ गग्रशी विक्रयाहनिधूवानीगिमगिर्मल ॥ ॥
ग्वगुलिथसकालग्वनशीकषू विक्राग ४ रुनाग्वगुलिथ
सधनूषधवि नूरीनविक्राग ॥ ग्वगुलिथससदाकालं अय ४

रुनं त्रैग्वर्यवधयशूशः निग्वयनं किमनसथ ॥ थधकंः श्री
कषूयाथसवेगं पायमृषीनश्रास्त्रादयकल ॥ ॥ अग्नि
नावाच ॥ रुनिह्वनगियापानिः दृष्टविह्वनयिस्मृत् अग्निकः
यापिसंयुक्तादरुगवहियावक ॥ ॥ विष्णुयानामलाडान
नामकालसां अलाडाननामकालसां पायनाशूशधकंगथ
धालसां मिखागिमियाशमिथिलसां दूकमिखानसायाश

मिथिलसांपूक. ५५. धकं अगिनामृषीन श्रीकृष्णया अग्रः
स आरूपाय कल ॥ ॥ यवा सवउ वाव ॥ सकृद्वर्षा विनः
ऊन रुनि विनियुक्त न धयं व धाय वि कान्य न भा कस्य गमनं प्र
ति ॥ ॥ म्वमनूरुय न रु वि धायान नानाय नया नाम रु
वि धकं ५५ आखल ने ग्वल रुयू अ भा क अ नया गल पू धकं यवा
भव मृषी न आरूपाय कल ॥ ॥ प्रलक्ष्य उ वाव ॥ हे किः

क क क क म रु स र्व दाम न प्रिये लभ वि दना मयी पू र्वं पिव
कि क नि वं तनं ॥ ॥ रु कि का का य पा ल व च न क्का दा स
दा कं वा क व व न क्का अ क्का न धाल सा श्री कृष्ण या ना म लभ वि
द ध कं नाम का य गु लि अ मृ ग गान अ रु ल्य ध कं प्र लक्ष्य मृषी
न आरूपाय कल ॥ ॥ श्री वा स द व उ वाव ॥ स खं स खं पू
न ४ स खं स खं वा गि द्वा व वि न्ना मि व दा ल्य वं भ स्रु न द व कं

सवात्यन ॥ ॥ सख्यसख्यनंसनकुमान आदिन वागविद
नयनिसन आरूदयकल थसंसावसवद मभुवाही कन भव
मभुगडाधमद विष्णुवाहिकन भवद वतडाधमदूधकं श्रीः
आसदवमृषीन आरूदयकल ॥ ॥ मार्क सुयउ वाच ॥ सः
ऊदं भादुदं दवसूखदं ऊगगा गुनूं कथं मूदुर्ल नपीनं वासुद
वंनयिकयत् ॥ ॥ मार्ग वासवियूडा म्भादु वियूडा म्

सूखवियूडा म्भादु संसावया गुनूं शयाडा विष्ठाक म्भादु थपिद म्भादु
म्वनयल किस्त्रुनूं यिकनायायधकं माव सुयमृषीन आरू
दयकल ॥ ॥ श्रीगम्यउ वाच ॥ निमिष निमिषादं वाप्रा ती
नां विष्णु विगनं गयगप्रकूरुदुप्रयाग नेमिषं वनं ॥ ॥ म्
ममनूखनयल किस्त्रुनूं वाद्य निस्त्रुनूं विष्णुया यिकनायायि
डाथुगुलिअस कूरुदुप्रयाग नेमिषाने म्भवनउतिधकं

ॐ गस्तु मृषीन आरू दयकल ॥ ॥ वामदवउवाच ॥ नि
 मिषं निमिखाडं वाके स्म न कि रु नार्दनं कल्य काटि सरुवा नां
 गलहं गरुल चयत् ॥ ॥ ग्वक्रमनूरय न मिषा पिगिया गाल
 रुलं ग्रीना नाय स समर्क्ष यायु ॥ ॥ ग्वक्रमनूरय या ग दाल कि का
 गिरु न्ननया कायू गरुल द ॐ डाधकं वामदवमृषीन आरू
 दयकल ॥ ॥ ॐ कदवउवाच ॥ आलाके तर्ष गाम्नाः

विर
 निवि वार्थ वायूनपून ४ ॐ दम कं सुनिख्यनं धयाना नाय
 लारुवि ॥ ॥ नूनक गाम्ना सं कि न वा नं वा न दाल या दाडा
 खय धूना ॥ सुनिषां न ग्रीना नाय स या ध्यान वा ही कन ४ ॐ
 नाद मधूधकं सु कदवमृषीन आरू दयकल ॥ ॥ नः
 वउक्रा दया दवा म षय ग्वग धा धना कीरु य नि स्य न ४ ॐ
 वं न वं ना नाय र्ष विरुं ॥ ॥ भूगुलि प्रका न स ४ वक्रा

दिदवनलामरुवनादिमषीज्वनयनिसनसयात्थरुयात्थ
लाशरुकिदयका'अश्रीकृष्णयाथसविष्ठादा'अक्राग्रया
सविष्ठागधकं॥ ॥ॐदंपविग्रमायूष्यंयूंस्थपायप्रस
भनंदस्वप्ननाभन'क्राग्रंयालुवेपनिकीर्त्तितं॥ ॥थगु
लिपांमुवयनिसनश्रीकृष्णयात'कीर्त्तनायालि'क्राग्रगथा'६
धालसा'मारायविग्रशया'अ'यो'६'६'हनां'आयूवधयशुयि'अ

मारायूय'रुल'लायू'अ'मही'६'या'६'गुलिं'नाभ'श'यू'अ'थ'धि
६'क्राग्र'थ'धकं॥ ॥ॐ६य'६०'न्या'त'न'ल्ला'य'६'वि'मंग
गमान'स'६'ग'वांस'ग'स'रु'स्यंस'म्य'दंग'स्य'६'रु'लं॥ ॥
ज्व'क्रम'नू'ष्य'सू'विय'विग्र'शया'अ'श्री'ज्व'नया'क'वि'रु'गया'अ
प्रा'ग'काल'स'६'थ'गुलि'पा'मु'व'गी'गा'या'क्रा'ग्र'वा'नि'अ'६'थ
क्रम'ष्य'या'ग'नू'न'क'पू'स्थ'रु'ल'द'यू'अ'ह'नं'सा'ल'क'कि'दा

नयाठापूस्थरुललायिडाधकं ॥ गतरुलंसमवा
प्रातिउ४५८०दितिसंस्तवंसर्वपापेविनिर्मुक्तविष्णुलाकं
सगच्छति ॥ ॥ स्वक्रमनूरुयन५गुलिफानिलेकोनिः
डाधक्रमनूरुयन५थीरुललायिडाधकं नानाऊर्म्मसया
रंगयापायसमस्तंरुयिडाप्राप्तकालसमाकथाधमवे
कंधयदविलायिडाधकं ॥ ॥ गीतागंगमयग्रीलम

विद्यागन्तुधऊचगुर्गकालसशकपूनऊर्म्मनविद्यन ॥
॥ ॥ स्वक्रमनूरुयनरुलसांगीतागंगमयग्रीलमविन्द
गन्तुधऊ५गंगकानादिनामकायिडाधक्रमनूरुयन
वन्धनभाऊकानसधानडानिडापूनरुनऊर्म्ममृलूरु
यमालिडामरुधकं ॥ ॥ गीताऊःपथनिलेल्हका
ईल्हकमवचनूरुयनसर्वपापेविष्णुलाकंसगच्छतिः

॥ ॥ गवक्रमनन्यनक्रिधंथगुसिपासुवगीगायासिलाक
रुप्रशलंवाप्रशलंधालवीडा॥ ॥ गवक्रमनन्ययादकापायं ना
भरुयूतामृष्टुस्यनलिविष्टुलाकसजानीडाधकंधपासु
वगीगायात्रर्थगमक्रमेनदेनिडाडाक्रयागसदादसूरुल
वधयशुयिडाधकं॥ ॥ ॐ गित्रीयासुवगीगाकाग्रंमः
नाफ॥ ॥ सम्वत् २२८ एतवदि १० वृहस्पतिवानर

नूवायधूनकाशला॥ ॥ रुदिसदं नूसदं वाममदाधानदीयन
काकुडालयासासिकयासिदिनीनायनपासादूरुलाग्र
थसादूरुगमक्रास्यंथकयलाडाक्रयागयंचमाहायागकरु
लाग्रमकुसर्वदा॥ ॥ ॐ नमः एगवगवासुदवाय॥
सदानुडउवाच॥ नाभाच्चालकनाऊला॥ ॥ यिनातिखलदेखहापापानि
यानि विनयंयूनं एवनिवाकयं॥ सदानदमविष्टुनस्यनसमस्तुलिषि
यनिकडा॥ ॥ एमविपनिमस्तुयासिनंरुलस्ययपदार्थकनदकन

लानपूयनूषनतुलमीधकंसुमननायातसायनमयनमीकृष्णसंतुष्टशय
 कृतमरुपायभायकृपयनकशयववितखनकलिततुलमीधयाखगुम्भ
 कृतयानलासतहावभाकलावृ॥ १ ॥ साकथं तुलमीलाके ४ पूजिताव
 नितानहिदमेननायियत्यनंरुलंकागिगवांदद॥ ॥ समरुलाकल
 नतुलमीशकदर्मनयज्ञसुमननायादानतुलमीकुरुतखयामागुलंकादि
 तिसादानविद्यायधदव॥ २ ॥ धन्याफुमाननालाकायस्मिन्पुन्यदिना
 वयस्यनिग्राममिनायाधंतुलमीयखहं ३ ॥ ॥ लानपूयनूषनसुविम

विप्रथायससाविग्रामसकायनिमिहिनतुलमीययावतगीवधतमि
 पुन्यरुमिधायधयनूषननिधन्यत्राय॥ ३ ॥ तुलमीधविविधानिधने
 गलनयलवोकनगधंकालोयवलाययकिहृदन॥ ॥ लानः
 पूष्णंयनूषनमीकृष्णानानिमिहिनतुलमीधयावतुलमी
 हतहायितुधयंयारुलवलवनकाय॥ ४ ॥ किंकनिष्यमितंपू
 कंसानेवरवविलुसे ४ तुलमीधननदवमयुक्तिखायनदेखरु॥ ॥
 यनपूयनूषनतुलमीयाहत्नपूजायादानयनमयनसंतुष्ट

शयित्वा ॥ १ ॥ तिर्ययाग्रादिगमने ॥ किन्तु किमिना वयं क्वचयन्ति
 नमः किं तु लगीदन कामले ॥ ॥ तुलसीयत्र न श्रीकृष्ण पूजाया कर्म
 यागं यत्तु गति तिर्ययाग्रायादान स्नानेनायममाल ॥ ६ ॥ समस्तसिद्धि
 लेयकं कर्म वायुमं तु लोकैर्बहुपूजनं यद्वत्तया कियवमां गति ॥
 ज्ञानमयं पूनूषनमस्तु लदयकं यत्र मय्यनया कतुलमीवा हाव
 थावा कायित्वा यत्तु पूनूषमा कर्तानिब निवय ॥ ७ ॥ स्नानदानेन
 था ध्यान प्रासन कर्म वायुमं तु लगी कर्तुं नाह सिन्धु यत्तु दधिके

ले ॥ ॥ स्नानयायसं ध्यानयायसं ज्ञानप्रासनयायसं यत्र मय्यनया
 कायायसं तु लगी कर्तुं नायागसाम हायुधदवद ॥ ८ ॥ तुलसीमः
 दं वयं यत्तु दानि सुवत्तु कर्म वायुमं विद्विदित्वा अहितं तस्य
 रुक्मं ॥ ॥ तुलसीया हासयुदं वा वाठिया मायनम हायुधं लो
 कयत्र मय्यनया मगदा थ थकाय विद्रु रुक्म धाय ॥ ९ ॥ लदगं स
 रुवं नि लं पूजा मित्राह निग था कनय विग्राहि के साम लविनासनं ॥
 थगुदि संकनय दत्तयं तु लगी काय ॥ १० ॥ मक्तु नाननयं कर्था गृहि
 लां तु लगीदनं पूजनं वासुदवाय नरु काटिगु संतरे ॥ ॥ थगुदि

श्रीकृष्णलयातुलमीकायानन्दकाठिन्यनभश्चनसदुद्धर्त
 ॥ ११ ॥ यद्वैजातं ह न निखं प्रियप्रिय ननु गुरुं मनयसिर्द्विगन्धवायाताल
 यन्वत्तमनी ॥ ॥ हनियेनभश्चनसप्रियवस्तुतुलमीउपानन्दनमद
 धननमप्रियनितिर्द्विगन्धवायातालकाकस्तुनियानं ॥ १२ ॥ सुवेनिसर्व
 दवावकिंननासूनसतमाकृष्णगल्लदसंल्लेनासमूडमथनंन ॥ ॥ स
 मूडमथनयातावत्सकृष्णयावत्तजिनकायतयूतुलमीदवयास्तीसम
 ल्लेनंमुनियाना ॥ १३ ॥ लमूर्द्धमागंतुलमीतीधृताविष्णुनास्वायंभक्त
 लस्यवद्वदर्थं कर्ममिधनायव ॥ ॥ ग्वनस्तुलमीमालानमूतनयाव

सतुत्तमी यथापूज्यनयन ४ र्वा न नाम अनायासात् ॥ १० ॥ सत्कनार्थममाः
 दवि पूजा वै श्वहि मां वत् आदिना सततं रक्ता तुत्तमी लां न माम्यहं ॥
 पूजापूर्व स हि मात्स्य य वै तस्यार्वा ती न तुत्तमी यथापूज्यनमहा दवस्त्र
 मिलात् ॥ १८ ॥ प्रयागवसिना निरुका न समाधवस्त्रव शयिता त्वं प्रिया द
 वा गंगा गल स मियग्म ॥ प्रयाग सव निती न स न की न तुत्तमी यथापूज्य
 नना नायन स्त्रामिलात् ॥ १९ ॥ यक कर्तु स माध तु सा वित्या प्राय ना क ताः
 पूरु नयन म क्ता र्थं तुत्तमी लां न माम्यहं ॥ पूरु न निती र्थ स क्क क
 पुन या नि क त म सा वि वि न तुत्तमी यथापूज्यन व प्र प्रा पूरुष लात् ॥ २० ॥ स वी हि

दवय निरि ४ कि न ना रि श्व शयिता स्त्र प्र तु मंग ला था य श्व वि ता त्वं न भामु
 ॥ २१ ॥ दव म्नी य निरु न स प्र या र्से हि न के या त तुत्तमी रक्ता या तं ॥ २२ ॥
 धर्म न न्य ग या या वै शयिता यि र्हि स्त्र यं स यिता तुत्तमी पून्या स्त्रामि ना हि
 ग मि क्ता ॥ २३ ॥ थ व थ व स्त्रामि न स ता य क स ग या स धर्म न न्य यि र्हा
 क न धर्म या ता ॥ २४ ॥ शयिता ना म द व न सिं वि ता न क्ता स न व मी ता या
 या रि ता रक्ता तुत्तमी व धु का व न ॥ २५ ॥ व दि का व न स ना म नं तुत्त
 मी य या ल क्ता स न सं ख यि या मि ता न नि दान या तं ॥ २६ ॥ तं सा क्ता
 यि नि गं ग म य था सा र्हे प्र मिय न त ये व तुत्तमी सा के र्द म्भ न स व ता व स

॥ समस्तुनदितगंगडहमथेणुसमीडहमताकस्यनभद्रन ॥१५॥
नम्यग्रीकिंकिध्यायांक्कपिनाकनस्यविनाडुसमीवाविनासार्थताया
संगमहनव ॥ किंकिध्यानगनसहग्रावनडुसमीययायून्यनवानिः
भावकतंतानाफीसंगमयाता ॥१६॥ पुनम्यगुमीदवितागनाकर्मन
कमस्वामिकार्यप्रहंगनरुनमान्पूननागत ॥ ॥ रुनमकनसमूड
यानयायवतसडुसमीनमस्वातयादायूननसंकावादावस्वामिकार्य
याग ॥१७॥ डुसमीग्रहनंदकाविमूखयागियातकंसर्वपात्रनिमा
नंउमरुथादिआधने ॥ ॥ ग्रनमरुवनडुसमीयावनस्यामाउनः

उमरुथायांयायभाक ॥१८॥ डुसमीपुत्रगतिगंयकायसितसंविहृः
गंगायनंमवादादसथनरुतप्रदं ॥ ॥ डुसमीयाहसनेकातानवसंखः
करुगितिसितसगयानंगंगमभातदुयावक्रिप्रसादानदियाहृतसाकः
॥१९॥ पुषिदंमप्रदवसीप्रमादहनिवसुनसिनादमथंनाहंतडुसमी
स्वोनमायहं ॥ ॥ दिनसमूडसमथनयानदासंकप्रयासतितुनजाय
तप्रेडुसमीथदुप्रयायमभवतामद ॥२०॥ दादस्यांजागननाप्रोयठित
डुसमीरुवंचात्रिसदयनाधम्वदमनतह्यकभव ॥ ॥ दादमीकद
डुसमीरुवयादयत्तासूयनेमात्रयनाधदतमनंमीकप्रनस्यहृतव
॥२१॥ यस्यायंजीवेनवातकोमासवाधकनथातमर्ववित्तयंजाकिडुस

[illegible]

विद्युत्तस्य मंगलं वदय गुरु॥ ॥ अथ नृपकथा कृतं सप्तमः सर्गः ॥
वया यथा युव यूषि स आस्थं तयूव थ क्रं या ज्ञु र्मह मरु व मंग ले शशिः
॥ ३१ ॥ सर्वे गुणगते नाना किं विदमंगले निम्नया कतवे एही नहि विद्या
अने हवं ॥ ३२ ॥ अत्रि वं व्याधि विनि मुक्त धर्म स्ववन्ध न न ति रु लगी सुव
पठितं ४ रु लं रु वति मानव ॥ ॥ तु लगी सुव या थ या दान अ काल म
तु भायि व धर्म समान धानि वयं न्य ला ०० व ॥ ३४ ॥ तिर्थ कति सह स्नानः
अरु लं व र त रु लं त रु लं सं मे वा ध्या ति पथि स्वा तु लगी सुवं ॥ ॥ य
नाय ई स बु क्राने क ति सह तिर्थ स स्नान या दा न या दा कु ष तु लगी सुव या
थ पा न य नु कृ य त जा रा ल त न या व ला न व भव क अन ता य ना रु ल इ ति ग दा वं वा द ॥
थ ते न मो हा गंगा मान कु ने मदु ॥ ३६ ॥ इति स्कण्ड पुराणे तुलसीदासो व